Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

हिंदी साहित्य की सृजन प्रक्रिया पर कृत्रिम मेधा का प्रभाव

प्रा.लक्ष्मण कदम*
राजीव गांधी महाविद्यालय, मुदखेड

शोध सार

मनुष्य की कुछ नवसृजन करने की बुद्धि ने प्रारंभिक दिनों से ही उसे विकास की ओर आकर्षित किया। उसकी जिज्ञासा और सृजन की इस खोज के कारण ही वह आज प्रगत एवं उन्नत बन चुका है। मनुष्य के विकासवादी परिवर्तन के चलते ही सांस्कृतिक कलाओं और साहित्य के प्रसार को जन्म दिया है। वर्तमान समय तकनीकी क्रांति एवं कृत्रिम मेधा का समय है। कृत्रिम मेधा ने जीवन के हर क्षेत्र में ज़ोरदार दस्तक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य एवं अपरिहार्य ढंग से प्रवेश भी किया है। शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, व्यापार, सूचना तथा प्रौद्योगिकी से लेकर भाषा तथा साहित्य सर्जन में एआई का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। प्रस्तुत शोध पत्र में हम कृत्रिम मेधा के कारण साहित्य सर्जन का क्षेत्र किस तरह प्रभावित होने लगा है, इसका विश्लेषण करेंगे। ए आई के कारण हिंदी भाषा तथा साहित्य सृजन के क्षेत्र में रोजगार की नई उपलब्धियां भी देखने को मिल सकती हैं। कृत्रिम मेधा संरचनाएं मशीन लर्निंग तकनीक के द्वारा निरंतर आधार पर डाटा निकाल कर संयोजित करते हुए विश्लेषण भी करती है जिसके लिए वह न्यूरल नेटवर्क और अन्य मॉडलों का प्रयोग करती है और कम समय में अधिक जानकारी संसाधित कर मानवीय प्रयासों को कम करते हुए अनुकूलित स्थितियों और परिस्थितियों को बढ़ावा देती है। AI आधारित टूल्स ने केवल साहित्यिक सर्जन ही नहीं बल्कि शोध, आलोचना, अनुवाद आदि क्षेत्र में भी उसका प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाया है। एआई आधारित टूल्स कविता, कहानियों के साथ-साथ निबंधों की रचना में भी सहायक सिद्ध हो रहे हैं। हिंदी साहित्य को वैश्विक मंच पर पहुंचाने, टेक्स्ट माइनिंग तथा डिजिटल संरक्षण जैसी तकनीकों द्वारा साहित्यिक धरोहर को सुरक्षित रखने और शोध के लिए सुलभ बनाने में भी एआई सहायक सिद्ध हुई है। दूसरी ओर इसके दुरूपयोग के कारण पारंपरिक पठन संस्कृति के साथ-साथ मौलिकता, नैतिकता, प्रमाणिकता, अकर्मण्यता तथा कॉपीराइट सुरक्षा जैसी कुछ चुनौतियां हमारे सामने खड़ी हैं और सकारात्मक दृष्टि से सोचे तो कई संभावनाएं भी हैं।

बीज शब्द: *कृत्रिम मेधा, हिंदी साहित्य सर्जन, अनुवाद, आलोचना, शोध, संरक्षण, डिजिटल, अभिलेखन।*

Received: 11/12/2025
Accepted: 24/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
प्रा.लक्ष्मण कदम
Email:

कृत्रिम मेधा (ए आई) का परिचय

कृत्रिम मेधा एक ऐसी तकनीक है जिसमें कंप्यूटर मशीन या सॉफ्टवेयर मानव की भांति सोचने, समझने और निर्णय करने की क्षमता प्राप्त करते हैं। कंप्यूटर विज्ञान का यह उप विभाग मानव श्रम को कम करने के साथ-साथ उसके कार्य की गति को अधिक तेज एवं प्रभावी बनाता है। यह कंप्यूटिंग प्रणाली स्वयं बुद्धिमानी से स्वतंत्रता से कार्य करती है और मानवीय श्रम को घटाती है। इसके प्रमुख क्षेत्र जैसे मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण, कंप्यूटर विजन आदि जैसी तकनीक का हिंदी भाषा तथा साहित्य सृजन में उपयोग बड़ी तेजी से बढ़ने लगा है।

एआई (AI) के जनक

कृत्रिम मेधा या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जनक जॉन मेकार्थी को माना जाता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के संस्थापकों में एलन ट्यूरिंग, एलन न्यूवल, मार्विन मिस्की, हर्बर्ट एके आदियों का समावेश है।

हिंदी साहित्य की सृजन प्रक्रिया पर कृत्रिम मेधा का प्रभाव-

वर्तमान युग ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़कर एआई का युग बनता जा रहा है। एआई के कारण हर क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन दृष्टिगत हो रहे हैं। साहित्य सृजन, अध्ययन,शिक्षण- प्रशिक्षण आदि क्षेत्र में भी उसका प्रवेश हो चुका है। हिंदी साहित्य सृजन में कृत्रिम मेधा (एआई) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण बनती जा रही है। वर्ल्ड वाइड वेब के आगमन के साथ ही साहित्य और साहित्यिक गतिविधियों के तौरतरीकों में आमूलचूल परिवर्तन आए हैं और वे पूरी मीडिया रूपों में व्याप्त हो गए हैं। अब इंटरएक्टिव फिक्शन या वर्चुअल स्टोरी वर्ल्ड जैसे साहित्यिक रूप उभरने के कारण पारंपरिक विधाओं और प्रारूपण का कड़ाई से पालन करना समाप्त हो गया है। कृत्रिम मेधा की सहायता से ही साहित्य और साहित्यिक रचनाएं, कथाएं एआई संरचनाओं के साथ

प्रत्यक्ष संवाद स्थापित कर रही हैं। वर्तमान में चैट जीपीटी और अन्य जेनरेटिव एआई आधारित टूल्स कविता, कहानी, निबंध, नाटक लेखन में निरंतर नए-नए विषयों और शैलियों का सृजन कर रहे हैं। साहित्य में रुचि रखने वाले लेखक इन उपकरणों का उपयोग अपने विषय विस्तार, समृद्ध शब्दावली तथा शैलीगत प्रयोगों के लिए कर रहे हैं परिणाम स्वरूप साहित्यिक सृजन में ताजापन, नवीनता और विविधता दृष्टिगत हो रही है और कृत्रिम मेधा का प्रयोग शिक्षक प्रशिक्षित प्रशिक्षण के साथ-साथ रचनात्मक लेखन की तकनीक सीखाने तथा लेखक की अभिव्यक्ति को मजबूत बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर चुका है। डीप लर्निंग में डाटा और वेरिएबल के न्यूरल नेटवर्किंग के द्वारा साहित्यिक और रचनात्मक गतिविधियों में आश्चर्यजनक परिणाम दिए हैं। सॉफ्टवेयर को पहले मानवीय भाषाओं की भिन्नता को समझने का काम सौंपा जाता है और फिर उसे एक दो वाक्य दिए जाते हैं जिनमें से मशीन अपनी कई कविताएं तरासती हैं। वर्तमान में कविता, कहानी, उपन्यास के निर्माण हेतु एआई की सहायता ली जा रही है। एआई का सहारा लेकर रॉस गुडबिन द्वारा रचित पहला अंग्रेजी उपन्यास 'द रोड' के रूप में सामने आया है। इसी तरह हिंदी साहित्य सृजन में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान बढ़ता जा रहा है। शिक्षण-प्रशिक्षण की प्रक्रिया में भी एआई एक प्रभावी साधन के रूप में उभर रहा है जो छात्रों को रचनात्मक लेखन की तकनीक सीखाने और लेखक की अभिव्यक्ति को सुदृढ़ एवं सशक्त बनाने में सहायक सिद्ध हो रहा है।

साहित्य एक सृजनात्मक कला है। सृजनात्मक साहित्य को यदि व्यापक अर्थ में ग्रहण किया जाए तो उसके अंतर्गत कथा, कहानी,उपन्यास ,नाटक के अतिरिक्त गीत, संगीत, नृत्य, चित्रकला, फिल्म आदि भी समाहित हो सकते हैं। प्राचीन समय में जो साहित्य भोजपत्र में संग्रहित था वही साहित्य वर्तमान में इंटरनेट क्लाउड में संग्रहित हो रहा है। इंटरनेट के माध्यम से जहां पर एक साथ कई लोग उसका उपयोग कर रहे हैं। साहित्य के क्षेत्र में चैट जीपीटी अलादीन की चिराग वाला जिन्स प्रतीत हो रहा है। इसका तात्पर्य यह है कि यहां पर जो मांगो सो मिल रहा है। किसी भी इच्छित विषय पर तुरंत रचनात्मक साहित्य उपलब्ध हो सकता है। कृत्रिम मेधा का उपयोग हिंदी साहित्य सृजन में किस तरह से हो रहा है इसके कुछ उल्लेखनीय उदाहरण देख सकते हैं। सृजनात्मक लेखन के क्षेत्र में शोधार्थियों ने चैट जीपीटी की सहायता से 'डिजिटल युग की उदासी' इस विषय पर कविता की रचना की जिसकी कुछ पंक्तियां दृष्टव्य हैं– "डिजिटल शोर में खो गया मन,
खोज रहा है शब्दों का आश्रय वन।"

'वर्षा का आनंद' इस विषय पर कविता की रचना की हेतु सूचित किया गया तो इस प्रकार की रचना तैयार हुई -

"घिर आए मेघ गगन में जब,
धरती ने ली राहत की साँस।
बूँद-बूँद गिरती अमृत सी,
सूखापन हुआ फिर से उदास।
टप-टप गिरती बूंदों का,
मीठा-सा संगीत बजे।
पत्तों पर मोती सजते हैं,
मन भी संग-संग नाचे सजे।
काग़ज़ की नाव बहाते बच्चे,
हँसी बिखरती हर आँगन में।
मिट्टी की सौंधी खुशबू से,
सपने जागें हर मन में।
नदियाँ, नाले, खेत-खलिहान,
नव जीवन से भर जाते हैं।
किसान के चेहरे की मुस्कान,
मेहनत के फल दिखलाते हैं।"

इसी प्रकार कहानी लेखन के प्रयोग में भी, "एक आभासी मित्र जिसने इंसानी भावनाओं को समझना शुरू कर दिया" जैसे विषय पर लघु कथाएं एआई के माध्यम से तैयार की गई हैं जिन्हें बाद में लेखक ने संशोधित कर उस रचना को अंतिम रूप प्रदान किया है। अर्थात यहां मानवीय रचनात्मकता तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता का सुंदर समन्वय हुआ है।

वर्तमान 'दहेज' प्रथा पर नाटक सृजन हेतु AI को सूचित किया जाए तो वह बिना मानवीय हस्तक्षेप के तुरंत इस प्रकार के मार्मिक संवाद देता है-

दृश्य:

एक मध्यम वर्गीय परिवार का घर। माता-पिता और बेटी के बीच बातचीत हो रही है।

बेटी: माँ, पापा, मैं शादी नहीं करना चाहती। मैं पढ़ना चाहती हूँ, आत्मनिर्भर बनना चाहती हूँ।

माँ: बेटी, समाज क्या कहेगा? दहेज की मांग पूरी नहीं कर पाएंगे तो क्या होगा?

बेटी: माँ, दहेज नहीं, मेरे लिए योग्य वर चाहिए। जो मुझे सम्मान दे, जो मुझे समझे।

पिता: बेटी, तेरी माँ ठीक कह रही है। समाज में दहेज के बिना शादी नहीं होती। हमें अपनी इज्जत का भी ख्याल रखना होगा।

बेटी: पापा, इज्जत दहेज से नहीं मिलती, इज्जत तो अपनों के प्यार और सम्मान से मिलती है। आप लोग मुझे पढ़ने की अनुमति दें, मैं खुद अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हूँ।

माँ: (आँसू बहाते हुए) ठीक है बेटी, हम तुम्हारे साथ हैं। तुम्हारी खुशी में ही हमारी खुशी है।

पिता: (दृढ़ता से) हाँ बेटी, हम तुम्हारे साथ हैं। तुम्हारी खुशी के लिए हम किसी भी चुनौती का सामना करने को तैयार हैं।

बेटी: (आँसू बहाते हुए) धन्यवाद माँ-पापा। मैं आपको गर्व दिलाऊँगी।

इस तरह की रचना के माध्यम से हम 'दहेज' प्रथा के खिलाफ जागरूकता फैला सकते हैं और समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। इन संवादों को मानवीय भाव- भावनाओं, अनुभवों तथा हृदय स्पर्शी भाषा के माध्यम से और अधिक निखारा जा सकता है ताकि उत्कृष्ट रचना का सर्जन हो सके। आलोचना के क्षेत्र में भी एआई आधारित विभिन्न प्रकार के अध्ययन सॉफ्टवेयर भाषा के साहित्यिक पाठ का भाव, शैली और संरचना का गहन विश्लेषण करके आधुनिक साहित्यिक समीक्षा और आलोचना को नए ढंग से प्रस्तुत कर रहे हैं।

वर्तमान समय में भाषाई अनुवाद और आलोचना के क्षेत्र में भी कृत्रिम मेधा का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण एवं सराहनीय रहा है। विभिन्न प्रकार के एआई आधारित अद्यतन अनुवाद टूल्स हिंदी साहित्य को अंग्रेजी एवं अन्य वैश्विक भाषाओं में तथा अन्य वैश्विक राष्ट्रीय तथा प्रादेशिक भाषाओं से हिंदी में अनुवादित कर रहे हैं जिससे साहित्य की पहुंच और प्रभाव क्षेत्र का विस्तार हुआ है। भारत जैसे बहुभाषी देश में जहां अनेक प्रकार की भाषाएं बोली जाती हैं, वहां भाषाओं की अनेकरूपता के कारण पूरे भारतवर्ष को एकता के सूत्र में बांधने की कड़ी हिंदी भाषा रही है। अतः भाषा और साहित्य क्षेत्र में अनुवाद का पर्याप्त महत्व रहा है। वर्तमान तकनीकी युग में मशीनों में मानव जैसी बुद्धिमता का विकास हो रहा है जिसके द्वारा अनेक प्रकार की समस्याओं को हल करने, निर्णय देने और भाषा को समझने की क्षमता विकसित हुई है। मशीनी अनुवाद के अंतर्गत अनुवादिनी, कांटैक्ट ट्रांसलेशन, माइक्रोसॉफ्ट ट्रांसलेटर, हाई ट्रांसलेट, मेमोरी आदि सिस्टम और ऐप्स उपलब्ध हैं।

अनुवाद के क्षेत्र में कृत्रिम मेधा की भूमिका के कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण इस प्रकार दे सकते हैं- सूरदास की निम्न पंक्ति का अर्थ और अनुवाद इस प्रकार है:

"उधौ, मन नाहि दस बीस, जौ हुतो सौ गयौ स्याम संग" का एआई के माध्यम से अनुवाद इस प्रकार है,--

अर्थ: हे उद्धव, मेरा मन दस-बीस की संख्या में नहीं है, जो बचा रहता। मेरा मन तो पूरी तरह से श्याम (कृष्ण) के साथ चला गया है।

अंग्रेजी अनुवाद: "O Uddhav, my mind is not in tens or twenties, it has gone completely with Shyam (Krishna)."

साथ ही प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी 'कफ़न' का अंग्रेज़ी अनुवाद इस प्रकार प्रस्तुत किया-

The Shroud

In the end, Madhav decided to cremate his wife's body without a shroud. On the way, he thought of collecting some money to buy a shroud, but instead, they both spent the money on liquor.…l"

इसी प्रकार कबीर के दोहे जैसे- "ढाई आखर प्रेम का पढ़ै सो पंडित भई, "साईं इतना दीजिए, जामे कुटुम्ब समाय" आदि जैसे प्रसिद्ध दोहों का एआई टूल्स ने विभिन्न भाषाओं में अनुवाद कर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी हिंदी साहित्य की पहुंच को विस्तृत कर सकते है। इससे यह स्पष्ट होता है कि हिंदी साहित्य को वैश्विक पटल तक पहुंचने में AI एक प्रभावी सेतु का कार्य कर रहा है।

वर्तमान में पुस्तक खरीद कर पढ़ने वाले पाठकों की संख्या निरंतर घटती जा रही है और डिजिटल किताबें पढ़ने वाले पाठकों की संख्या बढ़ रही है। साहित्य सृजन में योगदान देने वाले डिजिटल माध्यम बढ़ रहे हैं। अत: पाठक और साहित्य के संबंधों पर भी एआई का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। एआई समर्थित रीडिंग एप्लीकेशन पाठक की रुचि, आवश्यकता और प्राथमिकताओं के अनुसार उपयुक्त सामग्री का चयन कर बड़े आकर्षक ढंग में प्रस्तुत करती हैं जिससे व्यक्तिगत पठन अनुभव संभव हो पाता है। इसके साथ-साथ कृत्रिम मेधा आधारित वॉइस टूल्स हिंदी साहित्य को ऑडियो बुक और पॉडकास्ट के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं जिससे साहित्य का श्रव्य रूप अधिकाधिक पाठकों तथा श्रोताओं की आवश्यकताओं के अनुरूप उन तक पहुंच रहा है।

इतना ही नहीं तो संरक्षण और अभिलेखन के क्षेत्र में भी कृत्रिम मेधा की उपयोगिता अत्यंत महत्वपूर्ण है। AI और अभिलेखन दोनों ही आधुनिक तकनीकी के महत्वपूर्ण पहलू हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में क्रांति ला रहे हैं।अभिलेखन का अर्थ है डेटा या जानकारी को संग्रहीत करना और उसे भविष्य में उपयोग के लिए सुरक्षित रखना। यह प्रक्रिया विभिन्न रूपों में हो सकती है, जैसे कि डिजिटल अभिलेखन,भौतिक अभिलेखन या अन्य। अभिलेखन का उद्देश्य डेटा को सुरक्षित और व्यवस्थित तरीके

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

से संग्रहीत करना होता है ताकि आवश्यकता पड़ने पर उसे आसानी से पुनः प्राप्त किया जा सके। अभिलेखन और AI का संयोजन से डेटा के संग्रहण, विश्लेषण और उपयोग में क्रांति ला सकता है। AI तकनीकें अभिलेखन प्रक्रिया को अधिक कुशल और सटीक बना सकती हैं। उदाहरण के लिए AI सिस्टम्स अभिलेखित डेटा का विश्लेषण करके पैटर्न और रुझानों की पहचान कर सकते हैं, जो निर्णय लेने में सहायक हो सकता है। इसके अलावा, AI अभिलेखन प्रक्रिया को स्वचालित कर सकता है, जिससे समय और संसाधनों की बचत होती है।

उदाहरणस्वरूप AI और अभिलेखन का उपयोग व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रमों को विकसित करने और छात्र प्रदर्शन को ट्रैक करने में मदद कर सकता है। एआई आधारित स्कैनिंग तथा ओसीआर तकनीक की उपयोगिता से पांडुलिपियों और दुर्लभ ग्रंथों का डिजिटलीकरण हो रहा है। उदाहरण स्वरूप देखा जाए तो भारतेंदु हरिश्चंद्र की पांडुलिपियों को डिजिटल स्कैनिंग और ओसीआर तकनीक से डिजिटलीकरण कर ऑनलाइन तरीके से उपलब्ध कराया गया है। एआई आधारित सर्च तकनीक के प्रयोग से प्रेमचंद रचनावली के अंतर्गत आने वाले छोटे से छोटे कंटेंट को भी शोधार्थी हजारों वर्षों के बाद भी वैसे ही किसी एक प्रसंग या उदाहरण को तुरंत ढूंढ सकते हैं। वर्तमान में छायावाद की प्रमुख कवयित्री महादेवी वर्मा की कविताओं को वॉइस क्लोनिंग और टेक्स्ट स्पीच तकनीक के माध्यम से ऑडियो बुक के रूप में संरक्षित किया गया है जिससे नई पीढ़ी तक उनकी कृतियां श्रव्य रूप में पहुंच रही हैं।

साथ ही डिजिटल लाइब्रेरी और क्लाउड स्टोरेज में एआई संरचना अनेक ग्रंथों को संरक्षित कर भविष्य को मजबूत बना रही है। इसके अलावा विशाल साहित्यिक संग्रहों में पाठ खोज और अनुक्रमण की सुविधा भी एआई के कारण तुरंत सटीक और प्रभावी रूप में संभव हो रही है जिसका लाभ सभी पाठकों को हो रहा है।अभिलेखन और AI का संयोजन विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण लाभ प्रदान कर सकता है। जैसे-जैसे तकनीकें विकसित होती जा रही हैं, हम और भी अधिक नवाचारी अनुप्रयोगों की अपेक्षा कर सकते हैं जो हमारे जीवन को बेहतर बना सकते हैं।

हिंदी साहित्य सृजन में एआई की चुनौतियां और समाधान -

वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) ने साहित्य के क्षेत्र में नए प्रयोगों और संभावनाओं के द्वार खोले हैं। कविता, कहानी, लेख, अनुवाद और संपादन जैसे कार्यों में AI का उपयोग बढ़ रहा है। परंतु हिन्दी साहित्य सृजन के संदर्भ में AI कई गंभीर चुनौतियाँ भी लेकर आया है, जिन पर विचार करना आवश्यक है। एआई द्वारा रचित साहित्य में सबसे पहली चुनौती प्रमाणिकता के प्रश्न को लेकर है जो अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यहां मौलिकता पर प्रश्न चिन्ह बना रहता है जिसका समाधान मौलिकता परीक्षण करने वाले विश्वसनीय टूल्स के विकास तथा लेखन प्रक्रिया में पारदर्शिता सुनिश्चित करने से संभव हो सकता है। इस समस्या से निपटने हेतु AI को सृजनकर्ता के रूप में प्रस्तुत न कर केवल सहायक साधन के रूप में प्रयोग करना, मानवीय अनुभव और दृष्टि को लेखन का केंद्र बनाना तथा

रचना में लेखक के वैचारिक हस्तक्षेप को अनिवार्य करना आदि जैसे समाधान ढूंढ सकते हैं।

AI आधारित साहित्य में नैतिकता की दृष्टि से लेखक और मशीन के योगदान की सीमा निर्धारित करना कठिन है। इस संदर्भ में साहित्यिक संस्थान और शैक्षणिक निकायों द्वारा स्पष्ट दिशा निर्देश एवं आचार संहिताएं तैयार की जानी चाहिए।

एआई साहित्य में अनुभव और संवेदना आत्मानुभूति से नहीं, बल्कि सांख्यिकीय पैटर्न से लिखता है जिससे साहित्य में मानवीय अनुभूति, आत्मसंघर्ष और भावनात्मक गहराई के क्षीण होने का खतरा है। साहित्यिक चेतना और संवेदना का अभाव भी एआई द्वारा रचित साहित्य में दृष्टिगत होता है क्योंकि

साहित्य केवल शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि समय, समाज और व्यक्ति की चेतना की अभिव्यक्ति है। इस समस्या के समाधान हेतु

भावात्मक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति केवल मानव लेखक द्वारा होनी चाहिए और AI का उपयोग मात्र भाषा-सुधार, संरचना और संदर्भ-संग्रह तक सीमित रखकर

साहित्यिक शिक्षा में संवेदनशीलता पर बल देना चाहिए।

इसके साथ-साथ भाषाई संवेदनशीलता की चुनौती भी हमारे सम्मुख गहराती हुई दिखाई दे रही है।

भाषा की आत्मा और सांस्कृतिक संदर्भ की बात करें तो हिन्दी साहित्य भारतीय संस्कृति, लोक-जीवन, रीति-रिवाजों, मुहावरों और प्रतीकों से जुड़ा है। AI द्वारा निर्मित हिन्दी में कई बार सांस्कृतिक गहराई, स्थानीयता और भाषिक स्वाभाविकता का अभाव दिखाई देता है क्योंकि

भाषाई संवेदनशीलता की समस्या के संदर्भ में अभी यह कह सकते हैं कि एआई हिंदी भाषाओं की सांस्कृतिक बारीकियों और भावग्रहणता को पूरी तरह पकड नहीं पा रहा है जिसके समाधान हेतु AI को भारतीय भाषाओं पर आधारित व्यापक कॉर्प्स तैयार कर तथा भाषाविदों और तकनीकी विशेषज्ञों के सहयोग से उपाय कर सकते हैं। साथ ही लेखक द्वारा अंतिम संपादन और सांस्कृतिक परीक्षण करना तथा क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों का संतुलित प्रयोग करना चाहिए।

AI आधारित साहित्य में कॉपीराइट उल्लंघन और पायरेसी को लेकर भी अनेक चुनौतियां सामने आ रही हैं क्योंकि डिजिटल मंचों पर साहित्य रचना बिना अनुमति के अपलोड हो जाती है। इसका समाधान डिजिटल नियम, ब्लॉकचेन तकनीक आधारित लेखन, पंजीकरण और प्रभावी विविध प्रावधानों के माध्यम से किया जा सकता है। सोशल मीडिया ने साहित्य को प्रसारित करने हेतु लोकतांत्रिक स्वरूप तो दिया है किंतु इसके कारण साहित्यिक गुणवता बुरी तरह प्रभावित हुई है। ऐसी समस्या के समाधान हेतु साहित्यिक मंचों और प्रकाशन संस्थानों को गुणवत्ता आधारित मूल्यांकन एवं समीक्षात्मक संस्कृति को बढ़ावा देना होगा। डिजिटल साहित्य के कारण पाठकों की गहराई तथा चाव से पढ़ने की क्षमता में कमी आई है जो एक गंभीर चुनौती है। इस चुनौती से निपटने हेतु डीप रीडिंग को प्रोत्साहित करने वाले शैक्षणिक कार्यक्रमों तथा पठन अभियानों के माध्यम से समाधान ढूंढ सकते हैं। इसके साथ-साथ पारंपरिक पुस्तक संस्कृति भी एआई और डिजिटल माध्यम के प्रसार से प्रभावित हो रही है। इसके समाधान हेतु प्रिंट और डिजिटल साहित्य के मध्य संतुलन स्थापित किया जाए। साथ ही पुस्तक मेलों, साहित्यिक उत्सवों तथा पठन संस्कृति को बढ़ावा देने वाले विभिन्न कार्यक्रमों, अभियानों तथा प्रतियोगिताओं का आयोजन होना चाहिए ताकि पुनः पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा मिल सके।

AI द्वारा रचित साहित्य में लेखकीय पहचान और अधिकार का प्रश्न उठता है कि लेखक कौन है—मशीन या मानव? इससे लेखकीय स्वत्व,बौद्धिक संपदा अधिकार और साहित्यिक श्रेय को लेकर गंभीर विवाद उत्पन्न हो सकते हैं। साथ ही एआई की सहज उपलब्धता का नवलेखकों पर प्रभाव इस ढंग से पड़ता है कि बिना अभ्यास के सीधे AI पर निर्भर हो सकते हैं। इससे लेखन-प्रक्रिया, आत्मसंशोधन और वैचारिक परिपक्वता प्रभावित होने की आशंका है। शिक्षा क्षेत्र या शैक्षिक संस्थानों में AI निर्मित साहित्य का उपयोग साहित्यिक ईमानदारी पर प्रश्न उठाता है जो अभी महत्वपूर्ण चुनौती बनकर सामने आ रही है कि यहां यह तय करना कठिन हो रहा है कि रचना छात्र की है या मशीन की। इस समस्या का समाधान लेखन-प्रशिक्षण में AI की सीमाओं की शिक्षा देकर तथा हस्तलिखित और मौलिक लेखन को प्रोत्साहन देकर किया जा सकता है।

निष्कर्ष-

हिंदी साहित्य सृजन तथा विकास में कृत्रिम मेधा की भूमिका परिवर्तनकारी तथा महत्वपूर्ण सिद्ध हो रही है। हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के सृजनात्मक लेखन, अनुवाद, शोध, अभिलेखन और आलोचना जैसे कई क्षेत्र में एआई ने नए अवसर उपलब्ध कराए हैं। प्राप्त उदाहरणों से स्पष्ट है की कृत्रिम मेधा लेखक का सहायक बनकर कविता, कहानी, निबंध लेखन, अनुवाद के माध्यम से हिंदी साहित्य को वैश्विक मंच तक पहुंचा सकती है। एआई संरक्षण और अभिलेखन की प्रक्रिया द्वारा साहित्यिक धरोहर को सुरक्षित और सुलभ भी बनाने में मददगार है। कृत्रिम मेधा केवल सृजनात्मक साहित्य तक ही सीमित नहीं है बल्कि आलोचना और शोध में प्रयुक्त तकनीकें साहित्यिक पाठ के भाव, संरचना और प्रतीकात्मक प्रयोगों का भी सूक्ष्म विश्लेषण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

साहित्य सृजन में अनेक अवसर प्रदान करने वाली कृत्रिम मेधा से अनेक चुनौतियां भी जुड़ी हुई हैं, जैसे प्रमाणिकता, मौलिकता, भाव ग्रहीता, नैतिकता, पारंपरिक पठन संस्कृति का संकट, कॉपीराइट एक्ट संबंधी सुरक्षा, भाषाई संवेदनशीलता आदि जैसी चुनौतियां उपस्थित हैं किंतु इन चुनौतियों निपटने हेतु तकनीकी विकास और साहित्यिक मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित किया जाए। मौलिकता जांचनेवाले टूल्स, पारंपरिक समीक्षा संस्कृति को अधिक बढ़ावा, कॉपीराइट सुरक्षा के लिए डिजिटल नियम, भाषाई कॉर्प्स निर्माण करना आदि जैसे उपाय इस विषय में सहायक हो सकते हैं। यह तो स्पष्ट है कि कृत्रिम मेधा हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने तथा नई-नई ऊंचाइयों तक ले जाने की क्षमता रखती है। एआई लेखक की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि सहयोगी सिद्ध हो सकती है किंतु इसका उपयोग विवेकपूर्ण और रचनात्मक दृष्टि से किया जाए। आने वाले समय में कृत्रिम मेधा हिंदी साहित्य को वैश्विक पटल पर और भी सशक्त रूप में प्रस्तुत करेगा तथा साहित्य का अध्ययन और शोध को नई दिशा प्रदान करेगा।

AI हिन्दी साहित्य के लिए न तो पूर्णतः खतरा है और न ही सर्वसमाधान। वह एक उपकरण है, जो मानवीय सृजन को सशक्त बना सकता है, यदि उसका प्रयोग विवेकपूर्ण ढंग से किया जाए। हिन्दी साहित्य की आत्मा मानवीय अनुभव, संवेदना और सामाजिक चेतना में निहित है। अतः आवश्यक है कि AI का प्रयोग सहायक के रूप में किया जाए, न कि सृजनकर्ता के स्थान पर। वह उपकरण (Tool) हो सकता है, विकल्प (Replacement) नहीं

अत: AI को साहित्य का पूरक बनना चाहिए, प्रतिस्थापक नहीं।

संदर्भ :

1. ईटीवी भारत हिंदी टीम- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उदय: संभावनाएं और चुनौतियां ईटीवी भारत ETV Bharat http:/www.etvbharat.com/hi/opinion/the-rise-of-artificial-intelligence-prospects-and-challenges-hin24072202608 -(July 22,2024)

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

2. शर्मा रमेश कृत्रिम बुद्धिमत्ता और साहित्यिक रचनात्मकता नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन 2023

3. गुप्ता अंजलि डिजिटल युग में हिंदी साहित्य मुंबई वाणी प्रकाशन 2022

4. मिश्रा रामदरस, हिंदी साहित्य का नया परिदृश्य नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन 2005

5. सिंह, मोहन,आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इन लिटरेचर ऑपच्यरुनिटीज एंड चैलेंजिस दिल्ली सगे पब्लिकेशंस 2022

6. कुमार ए. एआई एंड इंडियन लैंग्वेज न्यू दिल्ली सेज पब्लिकेशन 2022

7. तिवारी पी. हिंदी साहित्य और डिजिटल मीडिया वाणी प्रकाशन 2020

8. जोशी प्रिया. एआई एंड इंडियन लैंग्वेज,ए न्यू होराइजन जर्नल ऑफ़ डिजिटल ह्यूमैनिटीज Vol. 12(3) पी पी 4558.

9. नेहरू युवा केंद्र संगठन भारतीय युवाओं में पाटन संस्कृति की प्रवृत्ति नई दिल्ली 2015

10.शर्मा रामविलास आधुनिक हिंदी साहित्य और तकनीक नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन

11.GoogleAI Blog.(n.d.)http://AI.googleblog.com/open AI (n.d.) Research papers. http://AI.googleblog.com/research-Kunchukuttam A.& Bhattacharya P.(n.d)Indic NLP Project

12. सुधाकर कल्लप्पा इंडी- हिंदी साहित्य सृजन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका- Aksharsurya:Peer Reviewed Multi lingual E Journal